

॥ श्री सरस्वती चालीसा ॥

□ Shri Saraswati Chalisa □

॥ दोहा ॥

जनक जननि पद कमल रज, निज मस्तक पर धारि ।  
बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि ॥  
पूर्ण जगत में व्याप्त तव, महिमा अमित अनंतु ।  
रामसागर के पाप को, मातु तुही अब हन्तु ॥

॥ चौपाई ॥

जय श्री सकल बुद्धि बलरासी । जय सर्वज्ञ अमर अविनासी ॥  
जय जय जय वीणाकर धारी । करती सदा सुहंस सवारी ॥  
रूप चतुर्भुजधारी माता । सकल विश्व अन्दर विख्याता ॥  
जग में पाप बुद्धि जब होती । जबहि धर्म की फीकी ज्योती ॥  
तबहि मातु ले निज अवतारा । पाप हीन करती महि तारा ॥  
बाल्मीकि जी थे बहम ज्ञानी । तव प्रसाद जानै संसारा ॥  
रामायण जो रचे बनाई । आदि कवी की पदवी पाई ॥  
कालिदास जो भये विख्याता । तेरी कृपा दृष्टि से माता ॥  
तुलसी सूर आदि विद्वाना । भये और जो ज्ञानी नाना ॥  
तिन्हहिं न और रहेउ अवलम्बा । केवल कृपा आपकी अम्बा ॥  
करहु कृपा सोइ मातु भवानी । दुखित दीन निज दासहि जानी ॥  
पुत्र करै अपराध बहूता । तेहि न धरइ चित सुन्दर माता ॥  
राखु लाज जननी अब मेरी । विनय करू बहु भांति घनेरी ॥  
मैं अनाथ तेरी अवलंबा । कृपा करउ जय जय जगदंबा ॥  
मधु कैटभ जो अति बलवाना । बाहुयुद्ध विष्णू ते ठाना ॥

समर हजार पांच में घोरा । फिर भी मुख उनसे नहिं मोरा ॥

मातु सहाय भई तेहि काला । बुद्धि विपरीत करी खलहाला ॥  
तेहि ते मृत्यु भई खल केरी । पुरवहु मातु मनोरथ मेरी ॥

चंड मुण्ड जो थे विख्याता । छण महं संहारेउ तेहि माता ॥  
रक्तबीज से समरथ पापी । सुर-मुनि हृदय धरा सब कांपी ॥

काटेउ सिर जिम कदली खम्बा । बार बार बिनवउं जगदंबा ॥  
जग प्रसिद्ध जो शुंभ निशुंभा । छिन में बधे ताहि तू अम्बा ॥

भरत-मातु बुधि फेरेउ जाई । रामचंद्र बनवास कराई ॥  
एहि विधि रावन वध तुम कीन्हा । सुर नर मुनि सब कहुं सुख दीन्हा ॥

को समरथ तव यश गुन गाना । निगम अनादि अनंत बखाना ॥  
विष्णु रूद्र अज सकहिं न मारी । जिनकी हो तुम रक्षाकारी ॥

रक्त दन्तिका और शताक्षी । नाम अपार है दानव भक्षी ॥  
दुर्गम काज धरा पर कीन्हा । दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा ॥

दुर्ग आदि हरनी तू माता । कृपा करहु जब जब सुखदाता ॥  
नृप कोपित जो मारन चाहै । कानन में घेरे मृग नाहै ॥

सागर मध्य पोत के भंगे । अति तूफान नहिं कोऊ संगे ॥  
भूत प्रेत बाधा या दुःख में । हो दरिद्र अथवा संकट में ॥

नाम जपे मंगल सब होई । संशय इसमें करइ न कोई ॥  
पुत्रहीन जो आतुर भाई । सबै छांड़ि पूजें एहि माई ॥

करै पाठ नित यह चालीसा । होय पुत्र सुन्दर गुण ईसा ॥  
धूपादिक नैवेद्य चढावै । संकट रहित अवश्य हो जावै ॥

भक्ति मातु की करै हमेशा । निकट न आवै ताहि कलेशा ॥  
बंदी पाठ करें शत बारा । बंदी पाश दूर हो सारा ॥

करहु कृपा भवमुक्ति भवानी । मो कहं दास सदा निज जानी ॥

॥ दोहा ॥

माता सूरज कान्ति तव, अंधकार मम रूप ।  
डूबन ते रक्षा करहु, परूं न मैं भव-कूप ॥  
बल बुद्धि विद्या देहुं मोहि, सुनहु सरस्वति मातु ।  
अधम रामसागरहिं तुम, आश्रय देउ पुनातु ॥

॥ इति सरस्वती चालीसा सम्पूर्णम् ॥